राज्य अध्याय 18

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **भजन संहिता 10,11,14 व 15**

अपनी बारी *आने* पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 10,11,14 और 15) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(मसीही कलीसिया)*** **'ञ' – श्रृँखला का पुनरावलोकन करें**

दो–दो करके **ञ–श्रृँखला "मसीही कलीसिया" का *पुनरावलोकन*** करें।

(1) कलीसिया का स्वभाव। 1 पतरस 2:5। तुम भी, आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्रहण हो।

(2) कलीसिया में गतिविधियाँ । प्रेरितों के काम 2:42। और वे प्ररितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।

(3) कलीसिया में सेवकाइयाँ। इफिसियों 4:12–13। जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए। जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएँ, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह के पूरे डील–डौल तक न बढ़ जाएँ।

(4) कलीसिया के अगुवों का लक्ष्य। प्रेरितों के काम 20:28। इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो; जिससे पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।

(5) कलीसिया में महिमा। इफिसियों 3:20–21। अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों की पत्री)*** **रोमियों 5:1–11**

परिचय। **रोमियों 5:1-11** का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच कदमों की विधि का उपयोग करें।

रोमियों 3:19-20 में, पौलुस ने अपने अध्ययन का निष्कर्ष निकाला है कि कोई भी अन्यजाति या यहूदी परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं है और हर एक व्यक्ति परमेश्वर के सामने निंदनीय (अपराधी) (यूहन्ना 3:18,36 से तुलना करें) है। वह यह भी निष्कर्ष निकालता है कि व्यवस्था का पालन करने से धार्मिकता को प्राप्त नहीं किया जा सकता। रोमियों 3:21-31 में, पौलुस सिखाता है कि धार्मिकता कैसे प्राप्त की जा सकती है।

रोमियों अध्याय 1:1 से 3:20 में यह साबित किया गया कि अन्यजातियों और यहूदियों को *परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है।* रोमियों अध्याय 3:21-4:25 में *परमेश्वर की धार्मिकता को पाने के मार्ग के बारे में* बताया गया है। रोमियों 3 में, मसीह की बलिदान स्वरूप मृत्यु *परमेश्वर की धार्मिकता का आधार या मूल है।* और रोमियों 4 में, अब्राहम का उदाहरण दिखाता है कि *विश्वास परमेश्वर की धार्मिकता प्राप्त करने का साधन है।*

रोमियों के अध्याय 5 से 8 में *परमेश्वर की धार्मिकता की प्रभावशीलता और परिपूर्णता* का पता चलता है। रोमियों 5:1-11 बताता है कि *परमेश्वर की धार्मिकता का वरदान* मसीही जन द्वारा शान्ति और अनुग्रह का अनुभव करके आशा और प्रेम का जीवन व्यतीत करना है।

कदम 1 - पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 5:1-11 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन-सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लिखें। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ ज़रूर साझा करें)

आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताऐँ कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें : हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

5:1-2

खोज 1. **विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने के दो परिणाम।**

(1) विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने का पहला परिणाम रोमियों अध्याय 5:1-2 में पाया जाता है। हमारे पास परमेश्वर द्वारा शान्ति पाने का आश्वासन है।

पद 1 के अनुसार, हमारा परमेश्वर के साथ नया सम्बन्ध है, जिसे "परमेश्वर में शान्ति" के रूप में व्यक्त किया जाता है। परमेश्वर ने मसीह के बलिदान के द्वारा हमें धर्मी ठहराते हुए शान्ति दी।

और हम परमेश्वर के साथ विश्वास के माध्यम से उसकी धार्मिकता को प्राप्त करके शान्ति पाते हैं।

इस प्रकार, परमेश्वर के साथ हमारी शान्ति इस तथ्य पर आधारित है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह के द्वारा हमारे साथ शान्ति स्थापित की! हम तीन बातों के गहरे आश्वासन के रूप में परमेश्वर के साथ इस शान्ति का अनुभव करते हैं :-

- हमारे सभी *पुराने पापों* को पूरी तरह से क्षमा कर दिया गया है (रोमियों 5:1-2)
- *वर्तमान* में सभी बुराइयों को हमारे भले के लिए ही समाप्त किया जा रहा है (रोमियों 8:28)
- और *भविष्य* में होने वाली कोई भी घटना हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती (रोमियों 8:38-39)!

पद 1-2 के अनुसार, हम अनुग्रह और यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ एक अनन्त सम्बन्ध या धार्मिकता की स्थिति में दृढ़ता के साथ खड़े हुए हैं। इस अवस्था या स्थिति का अर्थ है कि हम लगातार और आत्मविश्वास के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश कर सकते हैं।

(2) विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने का दूसरा परिणाम रोमियों अध्याय 5:2 में पाया जाता है। हमारे पास यह आश्वासन है कि भविष्य की सभी आशाएँ वास्तविकता बन जाएँगी।

"आशा" यह निश्चितता है कि भविष्य के लिए प्रतिज्ञाओं की आशा वर्तमान की वास्तविकता बन जाएगी। हम जिन बातों की वास्तविकता बनने की आशा रखते हैं, उन्हें परमेश्वर की "महिमा" द्वारा संक्षिप्त में बताया गया है और इसमें निम्नलिखित तीन बातें शामिल हैं। भविष्य में मसीही जन :-

- मसीह को आमने सामने देखेंगे और उनकी शारीरिक आत्मा (व्यक्तित्व) पूरी तरह से मसीह की महिमान्वित रूप के अनुरूप हो जाएगी (1 यूहन्ना 3:1-3)।
- मरे हुओं में से फिर जी उठेंगे और उनकी दीन-हीन देह का रूप बदलकर मसीह की महिमान्वित देह के अनुकूल हो जाएगी (फिलिप्पियों 3:20)।
- नई सृष्टि पर विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, स्वतंत्रता को प्राप्त करेंगें (रोमियों 8:21)।

क्योंकि मसीहियों को विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया है, उनके पास यह आश्वासन है कि वे भविष्य में परमेश्वर की महिमा का हिस्सा होंगे। यद्यपि, वर्तमान में अपने वास्तविक दैनिक जीवन में इसकी आशा धुँधली दिखाई पड़ती है, उनकी आशा (अपेक्षा) का आश्वासन एक अनुमान नहीं, बल्कि एक विशेषाधिकार है। यही कारण है कि मसीही जन "परमेश्वर की महिमा की आशा में आनन्दित होते हैं"।

5:3-11

खोज 2. **विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने के दो और परिणाम।**

(3) विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने का तीसरा परिणाम रोमियों अध्याय 5:5 में पाया जाता है। हमें यह विश्वास है कि परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा हमारी देह में रहता है और हमसे प्रेम करता है।

हालाँकि हम परीक्षाओं, दबावों (कठिनाइयों) और सताव का अनुभव करते है, यह कष्ट सीधे मसीही स्वभाव और आशा को बनाए रखने में अपना योगदान देते हैं। याकूब 2:2-4, इब्रानियों 12:5-11 और 1 पतरस 4:12-16 के अनुसार, हमारे कष्टों से भी मसीही परिपक्वता, पवित्रता, परिपूर्णता, और निश्चितता उत्पन्न होती है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं और परमेश्वर की महिमा के भागी होंगे।

हालाँकि हमारी ज़िम्मेदारी यह है कि हम मुश्किल समय में दृढ़ता से खड़े रहें, क्योंकि हम परमेश्वर से प्रेम करते है, यह तथ्य कि हम ऐसा कर सकते हैं और दृढ़ रहेंगे, इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं! अपने पवित्र आत्मा के माध्यम से, परमेश्वर बहुतायत से और लगातार हमारे हृदयों में अपने प्रेम को भरते हैं और हमें एक चेतना से भर देते हैं कि हम उसके प्रेम का मुख्य उद्देश्य हैं। परमेश्वर का हमारे प्रति प्रेम हमें अत्यधिक आशा से भर देता है कि अन्त में हम सभी परमेश्वर की महिमा के भागी होंगे। यही कारण है कि परमेश्वर में हमारी आशा (परमेश्वर से हमारी अपेक्षा) अपरिवर्तनीय है जिस प्रकार परमेश्वर का प्रेम हमारे प्रति कभी नहीं बदलता बल्कि सदैव एक जैसा रहता है!

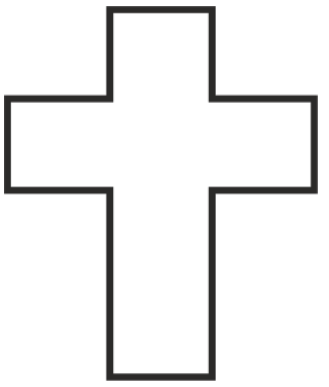
(4) विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने का चौथा परिणाम रोमियों अध्याय 5:6–11 में पाया जाता है। हमें अपने परम सम्पूर्ण उद्धार का आश्वासन है।

जबकि पृथ्वी पर लोग धर्मी और भले लोगों के लिए किसी के मरने की आशा लगाए हुए थे (रोमियों 5:7), यीशु मसीह ने वह किया जिसकी किसी को आशा नहीं थी : वह अधर्मी और दुष्ट लोगों के लिए मर गया! परमेश्वर के प्रेम ने यीशु मसीह को हमारे पापों के प्रायश्चित के बलिदान के रूप में देने के लिए विवश किया (रोमियों 5:8)।

केवल यीशु मसीह की मृत्यु द्वारा

परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता

उसकी दया और प्रेम से मेलं रखा



(क्रूस कस आड़ा बीम)

(क्रूस का सीधा खड़ा हुआ बीम)!

यदि मसीह की मृत्यु द्वारा, हम परमेश्वर के साथ मेल–मिलाप कर रहे हैं,
तो हम निश्चित रूप से मसीह के पुनरुत्थान द्वारा अन्तिम न्याय के दिन में
परमेश्वर के क्रोध से बच जाएँगे।
(रोमियों 5:9–10)।

यदि परमेश्वर ने कम लाभ दिया होता, अर्थात्, हमे पूर्ण रूप से *धर्मी ठहराना* और परमेश्वर के साथ हमारा *मेल करवाना,* तो निश्चित रूप से उसे भी अधिक लाभ, अर्थात्, हमारी पूर्ण पवित्रता और महिमा, नहीं मिलेगी! यही कारण है कि मसीही जन यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर में आनन्द मनाते हैं और उस उद्धार के द्वारा आनन्दित होते हैं जिसका आरम्भ पृथ्वी पर पहले से ही हो चुका है और अन्त में एक दिन स्वर्ग में यह पूरा होगा (रोमियों 5:11; तुलना करें फिलिप्पियों 1:6)!

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आइये रोमियों 5:1–11 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।
लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें। (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

5:1–2

प्रश्न 1. **परमेश्वर के द्वारा लोगों को शान्ति कैसे मिलती है?**

ध्यान दें। एक व्यक्ति, जो अपने भले या धर्म के कामों (व्यवस्था को ध्यान में रखकर) पर भरोसा करता है ताकि परमेश्वर के द्वारा धर्मी ठहराया जा सके, उसे कभी भी परमेश्वर के द्वारा शान्ति नहीं मिलेगी, या वह अपने हृदय में शान्ति का अनुभव नहीं कर सकता। वह अपने सभी भले और धर्म के कामों के द्वारा अपने पापों के विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध से बच नहीं सकता, और न ही परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले दण्ड के भय से बच सकता है।

परमेश्वर के द्वारा शान्ति तभी प्राप्त हो सकती है जब परमेश्वर स्वयं हमें यीशु मसीह की धार्मिकता के द्वारा धर्मी ठहराते हैं जिसे उसने अपने बलिदान और पुनरुत्थान द्वारा प्राप्त किया था। व्यवस्था को मानने के द्वारा परमेश्वर से शान्ति को प्राप्त करना हमारी अपनी सामर्थ्य से नहीं होता, बल्कि ये परमेश्वर है जो मसीह के प्रायश्चित के बलिदान द्वारा हमारे साथ शान्ति स्थापित करते हैं! परमेश्वर द्वारा शान्ति प्राप्त करने के बाद ही हम बदले में उसके साथ शान्ति स्थापित कर सकते हैं और वास्तव में उसकी शान्ति का अनुभव कर सकते हैं! परमेश्वर द्वारा हमसे मेल करने के बाद ही, हम स्वयं का परमेश्वर से मेल करवा सकते हैं! जब परमेश्वर हमारे साथ अपने सम्बन्ध को बदल देता है, तब उसके बाद ही हम परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को बदल सकते हैं! परमेश्वर के साथ हमारी शान्ति स्थापित होना तब आरम्भ होती है जब स्वयं परमेश्वर इस शान्ति को हमारे साथ स्थापित करते हैं।

5:3–5

प्रश्न 2 **– मसीही जन अपने क्लेशों में भी घमण्ड क्यों करते हैं?**

ध्यान दें। रोमियों 5:3 में लिखा है, "हम क्लेशों में भी घमण्ड करें।" हमारे क्लेशों में टूटे–फूटे संसार में पाए जाने वाले लोगों के साधारण क्लेश भी शामिल हैं। मसीही लोगों पर भी बीमारी, दुर्बलता, असमर्थता, परेशानी, असफलताएँ, निराशा, और महामारी, भूकम्प, बाढ़, सूखे और अकाल जैसी सामान्य आपदाएँ आती हैं। लेकिन मसीहियों को संसार में मसीहियों के विरुद्ध उत्पीड़न के कारण होने वाले विशेष क्लेशों को भी सहना होगा।

लेकिन क्या इन सभी कष्टों के कारण मसीही लोग दुखी नहीं होंगे? पौलुस यह कैसे कह सकता है कि मसीहियों को क्लेशों में भी आनन्द मिलता है? इसका उत्तर इस प्रकार से है : पृथ्वी पर होने वाली सभी बातें परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करती हैं! यहाँ तक कि मनुष्यों द्वारा दुःख उठाया जाना भी परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करता है। इससे पहले जब हम मसीही नहीं थे, तो हमने इन क्लेशों को परमेश्वर की हमारे प्रति नाराज़गी के रूप में माना। हालाँकि, जब परमेश्वर के साथ हमारा

सम्बन्ध बदल जाता है, तो लोगों, चीज़ों और घटनाओं के प्रति भी हमारा सम्बन्ध बदल जाता है! जब हम मसीह जन बन जाते हैं, तब हमें इस बात का एहसास होने लगता है कि क्लेश भी हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम की अभिव्यक्ति है! मसीह के लिए कष्ट उठाने को भी मसीही जन आदर के रूप में लेते हैं, क्योंकि जब मसीही जन मसीह के क्लेशों में शामिल होते हैं, तो वे मसीह की महिमा के भी भागी होंगे (मत्ती 5:4-12; रोमियों 8:17; कुलुस्सियों 1:24; 1 पतरस 4:13-14)। यीशु मसीह मसीहियों के क्लेशों को अपने ऊपर भोगे गए क्लेशों के रूप में मानते हैं!

मसीहियों ने भी अपने क्लेशों के *बीच* आनन्द उठाया। उनकी पीड़ाएँ परमेश्वर को एक ऐसा अवसर प्रदान करती हैं जिनमे परमेश्वर उनके लिए अपने समर्थन और उद्धार में अपनी सामर्थ्य को प्रगट कर पाता है। मसीहियों की समस्याएँ परमेश्वर के लिए संभावनाएँ बन जाती हैं! मसीहियों की अपनी निर्बलता परमेश्वर की सामर्थ्य को बढ़ाने का कार्य करती है (2 कुरिन्थियों 12:9)! जब मसीहियों को ठीक प्रकार से यह पता चलता है कि वे निर्बल हैं, लेकिन परमेश्वर सामर्थी और मदद करने के लिए तैयार है, तब वे परमेश्वर से सहायता माँगते हैं। क्योंकि परमेश्वर की सहायता काफ़ी है, जिससे मसीहियों का विश्वास मजबूत होता है। क्योंकि उनका विश्वास और मजबूत हो जाता है, इसलिए मसीही जन दृढ़ रहना चाहते हैं और वे ऐसा करके दृढ़ रह सकेंगे। मसीही जन यह महसूस करते हैं कि परमेश्वर इन क्लेशों के द्वारा व्यक्तित्व का निर्माण करता हैं, उन्हें इस दुनिया के लिए उपयोगी बनाता है और उन्हें आने वाली नई सृष्टि के लिए तैयार करता है। इसलिए, क्लेशों के द्वारा मसीही लोगों को कभी भी आश्चर्यचकित या विफ़ल नहीं होना चाहिए, क्योंकि क्लेश ये दर्शाता है कि हम पूरी तरह से परमेश्वर की सन्तान हैं। क्लेशों के बीच दुखी होना मसीही होने के साथ असंगत नहीं है। लेकिन मसीही लोग अपने क्लेशों में भी घमण्ड कर सकते हैं।

5:6-8

प्रश्न 3. **परमेश्वर हमारे लिए अपने प्रेम को कैसे दर्शाता है?**

ध्यान दें। रोमियों 5:6-10 कहता है कि, परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे, तभी मसीह हमारे लिए मरा।

(1) परमेश्वर प्रेमी स्वभाव का है।

यह सच नहीं है कि पुराने नियम के समय में स्वयं को प्रगट करने वाला परमेश्वर "युद्ध और प्रतिशोध का परमेश्वर" था, बल्कि नए नियम के समय में स्वयं को प्रगट करने वाला परमेश्वर "प्रेमी परमेश्वर" है। पुराने और नए नियम दोनों स्पष्ट रूप से सिखाते हैं कि परमेश्वर एक पवित्र परमेश्वर है, जो पाप से घृणा करता है, और एक प्रेमी परमेश्वर है, जो पापियों को बचाने के लिए उन्हें ढूँढ़ता है।

उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने कहा, "मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैंने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है" (यिर्मयाह 31:3)।
और "परमेश्वर प्रेम है। प्रेम इस में नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिये अपने पुत्र को भेजा" (1 यूहन्ना 4:8,10)।

बाइबल में "युद्ध"[1] देखें।

(2) परमेश्वर ने हमारे प्रति अपने प्रेम को क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा दर्शाया।

क्रूस पर मसीह की मृत्यु यह साबित नहीं करती है कि परमेश्वर प्रेम है, लेकिन यह दर्शाता है कि परमेश्वर का प्रेम क्या है। खोए हुए लोगों के लिए परमेश्वर का प्रेम उसे एकमात्र सम्भव काम करने के लिए विवश करता है जो खोए हुए लोगों को बचाने के लिए न्याय की परमेश्वर की इच्छा को अलग किए बिना बचा सकता है! ऐसा नहीं है कि परमेश्वर पापों को दण्डित किए बिना पापों को क्षमा कर देता है। एक प्रेम करने वाला परमेश्वर जो पापों को दण्ड दिए बिना छोड़ देता है वह एक अपवित्र और अधर्मी परमेश्वर है! बाइबल का परमेश्वर एक प्रेमी और दयालु परमेश्वर है और एक ही समय में एक पवित्र और धर्मी परमेश्वर है!

इसलिए, अपने प्रेम और दया (क्रूस का आड़ा बीम) के साथ अपनी पवित्रता और धार्मिकता (क्रूस का सीधा खड़ा हुआ बीम) का मेल कराने के लिए, परमेश्वर ने यीशु मसीह में मानवीय स्वभाव को धारण किया, उसने पृथ्वी पर एक सिद्ध पवित्र और धार्मिक जीवन व्यतीत किया और जितने पापी लोग उस पर विश्वास करते हैं उसने उन लोगों की जगह अपने प्राणों को दे दिया! यीशु मसीह केवल विश्वासियों के लिए एक उदाहरण के रूप में नहीं, ना ही एक शहीद के रूप में मरा, लेकिन विश्वासियों के विकल्प के रूप में उसने अपने प्राणों को दे दिया! जितने लोग उस पर विश्वास करते हैं उनके लिए यीशु मसीह की मृत्यु प्रायश्चित के बलिदान के रूप में हुई।

- परमेश्वर ने पापियों के अपराधों के प्रायश्चित का बलिदान दिया (मसीह की मृत्यु ने परमेश्वर की धार्मिक इच्छा को पूरा किया, पाप के विरुद्ध अपने पवित्र और धर्मी क्रोध को प्रगट किया और पापों को दूर कर दिया)। परमेश्वर ने पापियों को शान्ति प्रदान की।
- परमेश्वर ने उस पापी का परमेश्वर के साथ फिर से मेल करवा दिया जो परमेश्वर से अलग हो गया था। पापी ने परमेश्वर द्वरा शांति को प्राप्त किया।

(3) परमेश्वर निर्बल और अधर्मी लोगों के जीवन में मसीह के उद्धार के लगातार कार्य को लागू करके हमारे लिए अपने प्रेम को दर्शाता करता है।

पौलुस कहता है कि यीशु मसीह की मृत्यु, अधर्मी लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम का उच्चतम संभव या बोधगम्य प्रमाण है। पद 6 में लिखा है, "जब हम निर्बल (कमजोर) ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा"। हमारी निर्बलता यह है कि हमारे पास परमेश्वर की दृष्टि में जो

---

[1] बाइबल में ऐतिहासिक विवरणों में युद्ध। परमेश्वर ने युद्ध में अधर्मी कनानियों का नाश करने के लिए इस्राएल का उपयोग किया (व्यवस्थाविवरण 7:1-10)। उसने इस्राएल की अधर्मी जाति का नाश करने के लिए अश्शूरियों (यशायाह 8:6-9; 2 राजा 17:6-23) और बेबीलोन का यहूदा की अधर्मी जाति को बाबेल में ले जाने के लिए उपयोग किया (2 इतिहास 36:14-21) । उसने युद्ध में अधर्मी अश्शूर को हराने के लिए बेबीलोन का उपयोग किया (यशायाह 10:5,15,33)। उसने युद्ध में अधर्मी बेबीलोन को हराने के लिए फारसियों का उपयोग किया (यशायाह 13:3-11,17-22; दानिय्येल 5:22-30)। और उसने युद्ध में अधर्मी फारसियों को हराने के लिए यूनानी का भी उपयोग किया (दानिय्येल 8:20-21)।

बाइबल के शिक्षा-सिद्धान्तीय भागों में युद्ध। सभी युद्ध (जिसमें "पवित्र युद्ध" भी सम्मिलित है) निन्दनीय है। अपने पहले आगमन पर यीशु मसीह ने सभी युद्धों की निन्दा की। उसने कहा, "जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएँगे" (मत्ती 26:52)। "परमेश्वर का राज्य इस संसार का नहीं है। यदि ऐसा होता, तो मसीही युद्ध में लड़े होते" (यूहन्ना 18:36)। दुनिया में सभी युद्ध और संघर्ष लोगों की इच्छाओं (लालच और सत्ता की लालसा) से होते हैं। परन्तु इस सांसारिक युद्ध से मित्रता करना बाइबल के परमेश्वर का बैरी बनाती है (याकूब 4:1-4)।

बाइबल की सर्वनाश भविष्यवाणी में युद्ध। मसीह-विरोधी संसार विशेषकर मसीहियों से युद्ध लड़ते रहते है (प्रकाशितवाक्य 12:17)। अन्त में, अन्तिम मसीह-विरोधी मानव इतिहास में अन्तिम युद्ध के लिए सभी गैर-मसीहियों को इकट्ठा करेगा (प्रकाशितवाक्य 11:7; 13:7; 16:14,16; 17:14; 19:11,19; 20:8-9)।

मसीह-विरोधी मानव इतिहास में अन्तिम युद्ध के लिए सभी गैर-मसीहियों को इकट्ठा करेगा (प्रकाशितवाक्य 11:7; 13:7; 16:14,16; 17:14; 19:11,19; 20:8-9)।

आत्मिक और नैतिक रूप से भला है उसे करने की सामर्थ्य नहीं है। स्वभवतः, हम परमेश्वर के नियमों को नहीं मानते हैं, हम परमेश्वर की इच्छा को पूरा नहीं करते हैं और हम वास्तव में भले कार्य भी नहीं करते। हमारी निर्बलता हमारे पाप के कारण उत्पन्न होती है और पाप में मानवजाति के पतन के प्रभावों से स्वयं को बचाने की क्षमता हमारे अन्दर नहीं होती है। हमारी निर्बलता यह है कि हम स्वयं को परमेश्वर के मृत्युदण्ड (अन्त), संसार की आत्मिक और नैतिक दुराचारिता और क्लेश और मृत्यु से नहीं बचा सकते हैं। साधारण लोग यह कल्पना कर सकते हैं कि परमेश्वर को भले, धर्मी, पवित्र और भक्त लोगों से प्रेम करना चाहिए। लेकिन कोई भी यह कल्पना नहीं कर सकता है कि पवित्र और धर्मी परमेश्वर को अपवित्र और अधर्मी लोगों से प्रेम करना चाहिए और उन्हें छुड़ाने के लिए उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया! तथ्य यह है कि बाइबल के परमेश्वर ने ऐसा ही किया और यह सबसे बड़ा आश्चर्य है!

अगर परमेश्वर ने हमसे इसलिए प्रेम किया होता क्योंकि हम उससे प्रेम करते थे, तो वह हमसे इस शर्त पर तब तक प्रेम करता रहता जब तक हम उससे प्रेम करते रहते! तब हमारा उद्धार हमारे कपटी हृदयों की विवशता पर निर्भर करता। हालाँकि, क्योंकि परमेश्वर ने हमें सबसे पहले प्रेम किया और उसने हमसे भक्तिहीन, अधर्मी लोगों और अपने बैरी के रूप में प्रेम किया, और क्योंकि यीशु मसीह *भक्तिहीन, अधर्मी और बैरियों* के लिए मरा (रोमियों 5:6,8,10), हमारा उद्धार इस बात पर निर्भर नहीं करता कि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं, बल्कि केवल हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम की निरंतरता पर निर्भर करता है। (तुलना करें 1 यूहन्ना 4:10)!

इतने लोगों में से, शायद ही कोई व्यक्ति किसी धर्मी मनुष्य के लिए अपने प्राणों को दे, एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो हमेशा नियमों को मानता हो। वह एक भले मनुष्य के लिए मर सकता है, यानी उस मनुष्य के लिए जो उसके प्रति अपने प्रेम और दया को दर्शाता हो (रोमियों 5:7)। लेकिन यीशु मसीह ने पूरी तरह से इसके विपरीत किया जिसकी अपेक्षा नहीं की जा सकती : वह अधर्मी और दुष्ट मनुष्यों के लिए मरा! क्रूस पर मसीह की मृत्यु इतिहास में किसी भी मानवीय उदाहरण के बिना परमेश्वर के प्रेम की अभिव्यक्ति थी! रोमियों 5:6-8 में, पौलुस परमेश्वर के प्रेम की महानता का विस्तार करता है।

5:9-11

***प्रश्न 4* - "धार्मिकता", "मेल" और "उद्धार" में क्या अन्तर है?**

ध्यान दें।

(1) "धार्मिकता" परिस्थिति (स्थिति) के बदलाव का वर्णन करती है।

धार्मिकता एक कानूनी या न्यायिक अभिव्यक्ति है और इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था के अनुसार एक पापी को पूरी तरह से धार्मिक *घोषित कर दिया है,* क्योंकि अधार्मिकता का मूल्य चुकाया जा चुका है। परमेश्वर अब से इस पृथ्वी पर और बाद में न्याय के अन्त के समय में उसे एक धर्मी मनुष्य के रूप में मानते हैं और उसके साथ वैसा ही व्यवहार भी करते हैं (उसे अब दोषी नहीं मानते हैं, उसे माफ़ कर दिया गया है) (यूहन्ना 5:24 से तुलना करें)।

धार्मिकता में निम्नलिखित बातें शामिल हैं।

- मूल्य चुकाना और प्रायश्चित्त के बलिदान के द्वारा ऋणी का छुटकारा (पाप का शोधन)

- परमेश्वर की धार्मिक इच्छा को पूरा करना, पाप (अन्याय) के विरुद्ध उसके पवित्र और धार्मिक क्रोध (रोष) को शान्त करना
- विश्वासी के सभी अपराधों को क्षमा करना
- पापी का परमेश्वर के साथ मेल करवाना, उसे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पहले जैसा और परमेश्वर के ग्रहण योग्य बनाना
- इस बात का आश्वासन देना कि पवित्रता और महिमा जैसी आशीषें निश्चित रूप से मिलेंगी (रोमियों 8:29-30)।

रोमियों 5:9 में लिखा है, "कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे". बाइबल में इस अभिव्यक्ति का अर्थ हमेशा से यह रहा है कि, "क्रूस पर यीशु मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के द्वारा"। बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि हमारी धार्मिकता की नींव, कारण या आधार :

- मनुष्य का कार्य, विश्वास या आज्ञाकारिता नहीं है
- हममें मसीह का कार्य भी नहीं है
- लेकिन विश्वासियों के स्थान पर हमारे लिए मसीह का कार्य है (रोमियों 3:25; इफिसियों 2:13; इब्रानियों 9:12 से तुलना करें)।

(2) "मेल" सम्बन्ध में बदलाव का वर्णन करता है।

"मेल" का अर्थ है कि दोनों पक्ष, जो पूर्व में बैरी थे, उन्होंने एक दूसरे के साथ शान्ति बना ली है। बाइबल तीन प्रकार के मेल की बात करती है :-

- रोमियों 5:9-11 में पापियों के साथ परमेश्वर के मेल की बात की गई है। हमारे पापों के कारण, पूर्ण रूप से पवित्र और धर्मी परमेश्वर हमसे अलग हो गया है (यशायाह 59:1-2)। वह हमारे लिए एक बैरी की तरह है, जो हमारे पापों को दण्डित करता है (अन्यथा वह पवित्र या धर्मी नहीं होगा)! लेकिन मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के कारण, हमारे पापों के विरुद्ध उसके पवित्र और धर्मी क्रोध को शान्त किया गया है और हमारे (हमारी अपवित्रता और अधर्म के) प्रति उसके बैर को हटा दिया गया है। इसलिए, परमेश्वर अब हमसे अलग नहीं हुआ है!
- रोमियों 5:1 में परमेश्वर के साथ पापियों के मेल की बात की गयी है, अर्थात् विश्वासी परमेश्वर के साथ शान्ति का अनुभव करते हैं। इस तथ्य के कारण कि वे मसीह के प्रायश्चित के बलिदान में विश्वास करते हैं, परमेश्वर ने उन्हें धर्मी ठहराया और वे परमेश्वर के साथ शान्ति का अनुभव करते हैं। उन्होंने महसूस किया कि पवित्र और धर्मी परमेश्वर पापों से घृणा करता है, लेकिन अब वे अपने प्रति उसके क्रोध का अनुभव नहीं करते। इसलिए, हम अब परमेश्वर से अलग नहीं हुए हैं!
- मत्ती 5:23-24 में कलीसियाओं में भाइयों का एक दूसरे के साथ मेल की बात की गयी है। और इफिसियों 2:14-16 में अन्य जातियों से जुड़े लोगों का एक दूसरे के साथ मेल की बात कही गई है। क्योंकि परमेश्वर ने मसीहियों से अपना सम्बन्ध बदल लिया है, मसीही परमेश्वर के साथ, कलीसियाओं में अपने भाइयों के साथ, दूसरे राष्ट्र के लोगों के साथ और यहाँ तक की अपने बैरियों के साथ अपने सम्बन्धों को बदल सकते हैं। इसलिए, अन्यजाति के मसीही अब एक दूसरे से अलग नहीं हैं!

(3) "उद्धार" परिवर्तन की एक सतत प्रक्रिया को व्यक्त करता है।

उद्धार की *शुरुआत* होती है :–

- धार्मिकता से (पाप के *दोष से* छुटकारा)
- और मेल के साथ (पाप की *शर्म से* छुटकारा)
- जो नए जन्म (पाप की *दासता से* छुटकारा) की ओर ले जाता है (तुलना करें यूहन्ना 1:12–13)।

जीवनभर उद्धार *बना रहता है* :–

- शुद्धिकरण की एक लगातार चालने वाली प्रक्रिया में (पाप की सामर्थ्य और अन्धकार से छुटकारा)

और उद्धार *सिद्ध* है:–

- महिमा में (जो पाप की उपस्थिति और उसके सभी परिणामों से छुटकारा है : शारीरिक मृत्यु, पृथ्वी पर आने वाली आपदाएँ, इस वर्तमान दुनिया का भ्रष्टाचार और दुष्टात्माएँ)।

जब "उद्धार" को "धार्मिकता" से अलग किया जाता है (जैसा कि रोमियों 5:9–10 में दिया गया है), तो "उद्धार" उस कार्य के *पूरा* होने का संकेत देता है, जिसकी शुरुआत धार्मिकता है। इसमें दुष्ट संसार से, शैतान और दुष्टात्माओं के बुरे प्रभाव से, सभी प्रकार के क्लेशों और मृत्यु से छुटकारा, विनाश के सभी कारणों से बचाव, और स्वर्ग में और नई पृथ्वी पर अनन्त जीवन की विरासत शामिल हैं! रोमियों 5:9–10 में अन्तिम न्याय के दिन परमेश्वर के क्रोध से छुटकारा मिलता है। क्योंकि धार्मिकता पूर्ण है, यह अपरिवर्तनीय और स्थिर है। जो मसीह यीशु में हैं उनके लिए कोई दण्ड (नाश) की आज्ञा नहीं है (रोमियों 8:1)! "उद्धार" मसीहियों के लिए एक पूर्ण निश्चितता है! बाइबल का परमेश्वर कभी भी अपने कार्य को अधूरा नहीं छोड़ता है!

रोमियों 8:29–30 सिखाता है कि जिन लोगों को वह बुलाता है, वह उन्हें धर्मी ठहराता है, और जिन लोगों को वह धर्मी ठहराता है, उन्हें वह महिमान्वित भी करता है! और फिलिप्पियों 1:6 सिखाता है कि परमेश्वर भले कार्य आरम्भ करेगा, जो उसने हम में पूरा होने तक आरम्भ किये! यही कारण है कि रोमियों 5:10 में लिखा है, "क्योंकि बैरी होने की दशा में, तो मसीह की मृत्यु ने हमारा मेल परमेश्वर के साथ करवा दिया, और पुनर्जीवित मसीह का जीवन हमारे अन्तिम और पूर्ण उद्धार को हमेशा के लिए सुरक्षित कर देगा!" मसीह की मृत्यु और मसीह के पुनरुत्थान (रोमियों 4:25) के बीच एक स्थायी सम्बन्ध है। जो उसकी मृत्यु के लाभार्थी हैं, वे उन सभी बातों के लाभार्थी भी होने चाहिए जो उसके पुनरुत्थान के जीवन के भागी हैं। यह तथ्य कि मसीह पुनर्जीवित हुआ और महिमान्वित उद्धारकर्ता, महायाजक, भविष्यद्वक्ता और राजा के रूप में रहता है, एक सुरक्षित गारंटी है कि मसीह में सभी विश्वासियों को जिलाया जाएगा और वे हमेशा के लिए जीवित रहेंगे।

यह तथ्य कि मसीह में विश्वासी पहले से ही धर्मी ठहराए जा चुके हैं और उनका मेल हो चुका है और भविष्य में वे पूरी तरह से बचाए जाएँगे, उन्हें आनन्दित करता है। मसीही जन "परमेश्वर की महिमा की आशा में आनन्दित होते हैं" (रोमियों 5:2), "अपने क्लेशों में आनन्दित होते हैं" (रोमियों 5:3) और "प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जिसके द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर में आनन्दित होते हैं" (रोमियों 5:11)। मसीही जन उद्धार में आनन्दित होते हैं, जिसकी शुरुआत पहले से ही हो चुकी है, वह प्रतिदिन जारी है और मसीह के दूसरे आगमन पर पूरी होगी!

अपनी सेवकाई के आरम्भ में यीशु ने कहा, "और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उसमें से मैं कुछ न खोऊँ" (यूहन्ना 6:39)। और अपनी सेवकाई के अन्त में उन्होंने कहा, "जिन्हें तूने मुझे दिया, उनमें से मैंने एक को भी न खोया।" (यूहन्ना 18:9)!

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन से ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवतः अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आइये हम आपस में सोच-विचार करके रोमियों 5:1-11 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या पिफर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. रोमियों 5:1-11 में लिखें हुए सम्भव अनुप्रयोगों के उदाहरण।

5:1. हमारी जगह यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान पर विश्वास करके परमेश्वर की शान्ति को प्राप्त करें।

5:2. भले या धर्म के कामों द्वारा परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने की कोशिश करने के बजाय, यीशु मसीह पर विश्वास करके परमेश्वर के अनुग्रह को स्वीकार करें।

5:3-4. अपने वर्तमान के क्लेशों में आनन्द मनाएँ, क्योंकि परमेश्वर इन क्लेशों का उपयोग आपकी दृढ़ता, मसीही व्यक्तित्व और आशा के लिए करता है जो कभी भी आपको निराश नहीं कर सकते।

5:5. यह जान लें कि यीशु मसीह को अपने हृदय और जीवन में ग्रहण करके, परमेश्वर की पवित्र आत्मा आपके हृदय और जीवन में वास करती है। अपने पवित्र आत्मा के द्वारा, परमेश्वर आपके हृदय में अपने प्रेम को डालते हैं। एक मसीही जन प्रेम कर सकता है!

5:6-10. यह समझें कि स्वभाव से आप निर्बल, अधर्मी, पापी और परमेश्वर के बैरी हैं। यह एहसास करें कि यह सब तब बदलता है जब आप मानते हैं कि यीशु मसीह आपकी जगह पर मर गए। यह जानिए कि क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता को अपने प्रेम और दया के साथ मिलाने का एकमात्र सम्भव तरीका था!

5:9-11. इस बात से आश्वस्त रहें कि जब आप यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, तो आपको धार्मिकता, उसके साथ मेल-मिलाप और उद्धार प्राप्त हो जाता है!

"धार्मिकता" का अर्थ है कि आपको पाप के दोष और मृत्युदण्ड से छुटकारा मिल गया है। परमेश्वर ने आपके सभी अपराधों को क्षमा कर दिया है, अब आप उसकी दृष्टि में 100% धर्मी बन चुके हैं और भविष्य में वह आपको अपनी दृष्टि में 100% धर्मी होने का आदर-सम्मान देगा और आपके साथ एक धर्मी की तरह ही व्यवहार करेगा!

'फिर से मेल कराने' का अर्थ है कि आपको पाप की शर्म और अस्वीकृति से छुटकारा मिल गया है। परमेश्वर ने आपके साथ और आपने परमेश्वर के साथ शान्ति स्थापित की है। आपके और उसके बीच के आपस के सम्बन्ध पूरी तरह से फिर से पहले जैसे हो चुके हैं।

"उद्धार" का अर्थ है कि आप पहले से ही पाप के दोष और मृत्युदण्ड से बचाए जा चुके हैं, कि आप इस वर्तमान संसार में पाप की शक्ति और अन्धकार से अधिक से अधिक बचाए जा रहे हैं और मसीह के दूसरे आगमन पर आप पाप के सभी परिणामों और यहाँ तक कि पाप की उपस्थिति से पूरी तरह से बच जाएँगे।

2. रोमियों 5:1-11 के व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मेरा विश्वास है कि परमेश्वर ने मुझे धर्मी ठहराया है और मुझे शान्ति दी है, क्योंकि मैं यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में मानता हूँ। इसलिए मैंने भी परमेश्वर द्वारा शान्ति प्राप्त की है। "परमेश्वर द्वारा शान्ति" प्राप्त होने में निम्नलिखित बातें जानना शामिल हैं कि :-

हमारे सभी *पुराने पापों* को पूरी तरह से क्षमा कर दिया गया है।
वर्तमान में सभी बुराइयों को हमारे भले के लिए ही समाप्त किया जा रहा है।
और *भविष्य* में होने वाली कोई भी घटना हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती!

क्योंकि मैं यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में मानता हूँ, इसलिए मुझे विश्वास है कि मसीह में मेरे सभी दबाव, क्लेश और सताव बहुत महत्वपूर्ण हैं। वे मुझमें मसीही परिपक्वता और व्यक्तित्व उत्पन्न करते हैं और मुझे अपनी सेवकाई के लिए अधिक फलवन्त बनाते हैं। मुझे यह भी एहसास है कि यह परमेश्वर के लिए मेरा प्रेम नहीं है, वरन् मेरे लिए उसका प्रेम है, जिसकी वजह से मैं हर प्रकार के सताव और क्लेशों में दृढ़ बना रहता हूँ! मैं परमेश्वर की स्तुति करता हूँ कि वह मुझे कभी अकेला नहीं छोड़ता! उन्होंने स्वयं कहा है कि, "मैं न तो तुम्हें कभी अकेला छोड़ूँगा, न कभी त्यागूँगा।" इसलिए हम विश्वास के साथ कहते हैं : "प्रभु मेरा सहायक है, मैं किससे डरूँ। मनुष्य मेरा क्या बिगाड़ सकता है?"

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये रोमियों 5:1-11 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें।
(बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 5:1-11 का प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन 16,18,19 और 22** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(6) रोमियों 4:5।**
   पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। लूका 10:29-37 में दिये गये **"भले सामरी"** के दृष्टान्त की तैयारी करें। दृष्टान्त को समझाने के लिए छः निर्देशों का पालन करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर **अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।** शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।